अध्याय 48

याकूब का अन्तिम काल

उत्पत्ति का विवरण मिस्र में याकूब के समय के विषय बहुत कम बताता है; परन्तु यह इस बात को प्रकट करता है कि उसके जीवन के अन्तिम समय में, यूसुफ़ उसको मिलने आया, जो अपने दो पुत्रों, मनश्शे और एप्रैम को साथ लाया था। पुत्रों को याकूब के मरने से पहले उससे आशीष प्राप्त करनी थी।

याकूब के द्वारा बारह पुत्रों के बीच में यूसुफ़ के दो पुत्रों को रखा जाना (48:1-7)

[1]इन बातों के पश्चात किसी ने यूसुफ़ से कहा, सुन, तेरा पिता बीमार है; तब वह मनश्शे और एप्रैम नाम अपने दोनों पुत्रों को संग ले कर उसके पास चला। [2]और किसी ने याकूब को बता दिया, कि तेरा पुत्र यूसुफ़ तेरे पास आ रहा है; तब इस्राएल अपने को सम्भाल कर खाट पर बैठ गया। [3]और याकूब ने यूसुफ़ से कहा, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कनान देश के लूज़ नगर के पास मुझे दर्शन देकर आशीष दी, [4]और कहा, सुन, मैं तुझे फुला-फलाकर बढ़ाऊंगा, और तुझे राज्य-राज्य की मण्डली का मूल बनाऊंगा, और तेरे पश्चात तेरे वंश को यह देश दे दूंगा, जिस से कि वह सदा तक उनकी निज भूमि बनी रहे। [5]और अब तेरे दोनों पुत्र, जो मिस्र में मेरे आने से पहिले उत्पन्न हुए हैं, वे मेरे ही ठहरेंगे; अर्थात जिस रीति से रूबेन और शिमोन मेरे हैं, उसी रीति से एप्रैम और मनश्शे भी मेरे ठहरेंगे। [6]और उनके पश्चात जो सन्तान उत्पन्न हो, वह तेरे तो ठहरेंगे; परन्तु बंटवारे के समय वे अपने भाइयों ही के वंश में गिने जाएंगे। [7]जब मैं पद्दान से आता था, तब एप्राता पहुंचने से थोड़ी ही दूर पहिले राहेल कनान देश में, मार्ग में, मेरे सामने मर गई: और मैंने उसे वहीं, अर्थात एप्राता जो बेतलेहम भी कहलाता है, उसी के मार्ग में मिट्टी दी।

आयत 1. याकूब की अभी होने वाली मृत्यु का विवरण पहले ही 47:29 में दिखाई देता है; परन्तु कई वृद्ध जो मृत्यु के करीब होते हुए दिखाई देते हैं अपने इस संसार से कूच करने से पहले कई वर्ष तक जीवित रहते हैं। बाइबल अंश 47:29-31 और 48:1-22 घटनाओं के सम्बन्ध में विशेष समय का संकेत नहीं देता है। इसके बजाए, 48:1 इस भाव के साथ आरम्भ होता है **इन बातों के पश्चात**।

इस अवसर पर, **यूसुफ़** को समाचार मिला कि उसका पिता बीमार है; उसका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। "बीमार" के लिए इब्रानी शब्द חָלָה *(चलाह)* का अर्थ "कमज़ोर" भी हो सकता है (न्यायियों 16:7, 11, 17)। क्योंकि याकूब लगभग 147 वर्ष का था (47:28), यूसुफ़ ने अनुमान लगाया कि स्थिति गम्भीर है, सम्भवतः कुलपति का अन्तिम समय आ गया हो। इसलिए, **यूसुफ़ ने अपने दोनों पुत्रों मनश्शे और एप्रैम** को पिता को देखने के लिए **अपने साथ लिया**।

आयत 2. जब **याकूब (इस्राएल)** ने जाना कि **यूसुफ़** उससे मिलने आया है, उसने अपना साहस जुटाया या "बटोरा" (NIV और अपनी खाट पर बैठ गया (देखें 47:31; 49:33)।

आयत 3. भले ही याकूब का स्वास्थ्य गिर रहा था, फिर भी उसकी स्मरण शक्ति मज़बूत थी। उसने उन प्रतिज्ञाओं को याद किया जो बहुत वर्ष पहले परमेश्वर ने बेतेल में उससे की थीं। जैसे ही उसने उनको यूसुफ़ के साथ जोड़ा, उसने कहना आरम्भ किया, "सर्वशक्तिमान ईश्वर [אֵל שַׁדַּי, *एल शदाई*] ने **कनान देश के लूज़** [बेतेल] **नगर के पास मुझे दर्शन देकर आशीष दी"** (देखें 35:6-12)।

आयत 4. याकूब ने उन गलतियों को नहीं बताया जो उसने बीते समय में की थीं। उसने अपने भाई एसाव के साथ की चालबाज़ी से एक कटोरी दाल के बदले खरीदे गए पहिलौठे के अधिकार, अपने पिता से झूठ बोलने और उसको धोखा देने जो मृत्यु शय्या पर था या राहेल और उसके पुत्रों और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ किए गए पक्षपात के विषय कुछ नहीं कहा। वह कई नैतिक और आत्मिक अपराधों पर खेद प्रकट कर सकता था, परन्तु याकूब का ज़ोर इस समय परमेश्वर के भरपूर अनुग्रह पर था। विवरण पर न ठहरते हुए उसने कहा, "इन वर्षों में मैंने जो कुछ किया उसके स्थान पर परमेश्वर ने मुझे आशीष दी।"

परमेश्वर ने याकूब को **फलवंत करने**, उसके वंश को **बढ़ाने** और उसके वंश को कनान देश सदा के लिए (עוֹלָם, *'ओलाम*[1]) निज भूमि बनाने की प्रतिज्ञा दी। अब उसका एक नया नाम था ("इस्राएल"), एक नई आशा और एक नई मंजिल। परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञाएँ की थीं उनके विषय सोचते हुए याकूब ने यूसुफ़ को याद करवाया कि मिस्र उसके परिवार का वास्तविक घर नहीं है। भले ही फ़िरौन ने उन्हें कई आशीषें प्रदान की हैं, कनान वह देश है जिसे परमेश्वर ने अब्राहम को उसके वंश को देने के लिए प्रतिज्ञा दी थी।

आयत 5. फिर याकूब ने यूसुफ़ के **दो पुत्रों** के विषय कहा, जो **मिस्र देश में** [उससे और आसनत से] **उत्पन्न हुए** थे (देखें 41:50-52)। उसने दृढ़तापूर्वक कहा कि उसके पास **एप्रैम और मनश्शे**[2] को अपने निज पुत्रों के रूप में लेने का दिव्य अधिकार है, हालांकि वे वास्तव में उसके पोते थे,[3] क्योंकि परमेश्वर ने उसे अब्राहम की प्रतिज्ञा दी थी। सारांश में, याकूब अपने पहिलौठे पुत्र के पद का इनकार कर रहा था, पहिलौठे के अधिकार को पाने की क्षमता में। यह उसके पापों का दण्ड था (34:25-30; 35:22; 49:3-7; 1 इतिहास 5:1, 2)। उत्पत्ति का लेखक भविष्य के पाठकों के लिए व्याख्या कर रहा था कि कैसे एप्रैम और मनश्शे इस्राएल के दो गोत्रों के प्रधान गिने गए और उन में से प्रत्येक ने कैसे

प्रतिज्ञा के देश में अपना अलग से भाग[4] विरासत के रूप में प्राप्त किया।

आयत 6. याकूब यूसुफ़ को बताता चला गया कि अतिरिक्त **वंश** उसका अपना **वंश** गिना जाएगा। जब इस्राएल प्रतिज्ञा के देश में आएंगे, बंटवारे के समय वे अपने **भाइयों ही के वंश में गिने जाएंगे**। अन्य शब्दों में, यूसुफ़ का अतिरिक्त वंश एप्रैम और मनश्शे के गोत्रों में जीवित रहेगा।

आयत 7. एप्रैम और मनश्शे के गोद लिए जाने को उचित ठहराने के लिए, याकूब बीते समय की घटनाओं की ओर मुड़ा। उसका ध्यान पीछे की ओर गया जब उसका परिवार **पद्दान** [-अराम] **से आया**, अर्थात हारान देश से; उसके लिए बड़ा **दुःख** हुआ, उसकी प्रिय पत्नी **राहेल की कनान देश में मृत्यु हो गई**। यह तब हुआ जब वे एप्राता (या बेतलेहम) से **अभी कुछ दूरी पर ही थे**। उसने उसे **एप्राता के मार्ग में मिट्टी दी** (देखें 35:16-20)। याकूब ने यूसुफ़ को यह कहानी इस बात पर ज़ोर देते हुए बताई कि उसकी माँ अकाल मृत्यु उसके द्वारा होने वाले अतिरिक्त पुत्रों की सम्भावना की समाप्ति थी। इसलिए, याकूब ने यूसुफ़ के पुत्रों को अपने निज पुत्रों के रूप में प्रतिनिधि के द्वारा गिना और इससे राहेल के गोत्र की संख्या में वृद्धि हुई।[5]

एप्रैम और मनश्शे की आशीष (48:8-22)

[8]तब इस्राएल को यूसुफ़ के पुत्र देख पड़े, और उसने पूछा, ये कौन हैं? [9]यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा, ये मेरे पुत्र हैं, जो परमेश्वर ने मुझे यहां दिए हैं: उसने कहा, उन को मेरे पास ले आ कि मैं उन्हें आशीर्वाद दूं। [10]इस्राएल की आंखें बुढ़ापे के कारण धुन्धली हो गई थीं, यहां तक कि उसे कम सूझता था। तब यूसुफ़ उन्हें उनके पास ले गया; और उसने उन्हें चूमकर गले लगा लिया। [11]तब इस्राएल ने यूसुफ़ से कहा, मुझे आशा न थी, कि मैं तेरा मुख फिर देखने पाऊंगा: परन्तु देख, परमेश्वर ने मुझे तेरा वंश भी दिखाया है। [12]तब यूसुफ़ ने उन्हें अपने घुटनों के बीच से हटाकर और अपने मुंह के बल भूमि पर गिर के दण्डवत की। [13]तब यूसुफ़ ने उन दोनों को लेकर, अर्थात एप्रैम को अपने दाहिने हाथ से, कि वह इस्राएल के बाएं हाथ पड़े, और मनश्शे को अपने बाएं हाथ से, कि इस्राएल के दाहिने हाथ पड़े, उन्हें उसके पास ले गया। [14]तब इस्राएल ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर एप्रैम के सिर पर जो छोटा था, और अपना बायां हाथ बढ़ाकर मनश्शे के सिर पर रख दिया; उसने तो जान बूझकर ऐसा किया; नहीं तो जेठा मनश्शे ही था। [15]फिर उसने यूसुफ़ को आशीर्वाद देकर कहा, परमेश्वर जिसके सम्मुख मेरे बापदादे अब्राहम और इसहाक [अपने को जानकर] चलते थे, वही परमेश्वर मेरे जन्म से ले कर आज के दिन तक मेरा चरवाहा बना है; [16]और वही दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है, वही अब इन लड़कों को आशीष दे; और ये मेरे और मेरे बापदादे अब्राहम और इसहाक के कहलाएं; और पृथ्वी में बहुतायत से बढ़ें। [17]जब यूसुफ़ ने देखा, कि मेरे पिता ने अपना दाहिना हाथ एप्रैम के सिर पर रखा है, तब यह बात उसको बुरी लगी: सो उसने अपने पिता का हाथ इस मनसा से

पकड़ लिया, कि एप्रैम के सिर पर से उठा कर मनश्शे के सिर पर रख दे। 18और यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा, हे पिता, ऐसा नहीं: क्योंकि जेठा यही है; अपना दाहिना हाथ इसके सिर पर रख। 19उसके पिता ने कहा, नहीं, सुन, हे मेरे पुत्र, मैं इस बात को भली भांति जानता हूं: यद्यपि इसे भी मनुष्यों की एक मण्डली उत्पन्न होगी, और यह भी महान हो जाएगा, तौभी इसका छोटा भाई इस से अधिक महान हो जाएगा, और उसके वंश से बहुत सी जातियां निकलेंगी। 20फिर उसने उसी दिन यह कहकर उन को आशीर्वाद दिया, कि इस्राएली लोग तेरा नाम ले ले कर ऐसा आशीर्वाद दिया करेंगे, कि परमेश्वर तुझे एप्रैम और मनश्शे के समान बना दे: और उसने मनश्शे से पहिले एप्रैम का नाम लिया। 21तब इस्राएल ने यूसुफ़ से कहा, देख, मैं तो मरने पर हूं: परन्तु परमेश्वर तुम लोगों के संग रहेगा, और तुम को तुम्हारे पितरों के देश में फिर पहुंचा देगा। 22और मैं तुझ को तेरे भाइयों से अधिक भूमि का एक भाग देता हूं, जिस को मैं ने एमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और धनुष के बल से ले लिया है।

आयतें 8, 9. इस पद में याकूब का प्रश्न परेशान करने वाला है। उसने पूछा, **ये कौन हैं?** जब उसने **यूसुफ़ के पुत्रों** को देखा भले ही 48:1, 2, 5 में वह पहले ही उन्हें एप्रैम और मनश्शे के रूप में पहचान चुका था। एक सम्भावित व्याख्या यह है कि याकूब अब औपचारिक रूप से अपने पोतों को अपने पुत्र गिने जाने के रूप में गोद लेने वाला था; हो सकता है कि गोद लेने की उपयुक्त रस्म का नाम घोषित करना एक भाग था। यही प्रथा मृत्यु शय्या की आशीष के लिए ज़रूरी थी (देखें 27:18)।[6] इसलिए, **यूसुफ़** ने याकूब को उत्तर दिया, **"ये मेरे पुत्र हैं, जो परमेश्वर ने मुझे यहां दिए हैं।"** यूसुफ़ ने अपने पुत्रों के वरदान के लिए परमेश्वर को श्रेय दिया (देखें 33:5), जो मिस्र में उत्पन्न हुए थे। इस भाव के साथ याकूब ने यूसुफ़ को उत्तर दिया, **उनको मेरे पास ले आ कि मैं उन्हें आशीर्वाद दूं।**

आयत 10. पद 48:8 में किए गए प्रश्न का एक अन्य सम्भावित कारण लेखक पद 10 में **याकूब की आँखों की दृष्टि के विषय बताता है इस्राएल की आँखें बुढ़ापे के कारण धुन्धली हो गई थीं**, यहां तक कि उसे कम सूझता था। यह स्थिति पद 27:1 में इसहाक के अनुरूप की स्थिति है, और होने वाली क्रियाएँ उसकी अपनी भी याद करवाती थीं। तब यूसुफ़ [अपने पुत्रों को] उसके [याकूब के] पास ले गया; और उस ने उन्हें चूमकर गले लगा लिया (देखें 27:26, 27)।

आयत 11. इस्राएल ने **यूसुफ़** से कहा, **मुझे आशा न थी, कि मैं तेरा मुख फिर देखने पाऊंगा,** क्योंकि उसने बहुत पहले समझ लिया था कि उसका पुत्र मर गया है (37:31-35; 42:36)। अपने जीवन भर याकूब को दुःख और अविश्वास का अनुभव होने पर भी, उसकी आशाओं और कल्पना से बढ़कर परमेश्वर की प्रतिज्ञा उसे आशीषित करने की थी। परमेश्वर ने केवल उसे यूसुफ़ को जीवित देखने का अवसर दिया और उसे मिस्र का उच्च अधिकारी होते हुए देखने का भी अवसर दिया परन्तु याकूब ने अपनी वार्तालाप में जोड़ा, **परमेश्वर ने मुझे तेरा वंश भी दिखाया है।**

आयत 12. यूसुफ़ का प्रत्युत्तर मनश्शे ओर एप्रैम को उनके दादा के **घुटनों** पर लेना था। इस घटना में "घुटनों पर लेना" संभवतः बच्चा जनने से सम्बंधित मुहावरा है। पिता का "घुटनों पर जन्म देना" यह कहने का एक तरीका था कि पिता ने बच्चे को वैध वंशज और वारिस के रूप में स्वीकार कर लिया है (देखें 30:3; 50:23)। इस घटना में बच्चे का जन्म नहीं हो रहा था (देखें अय्यूब 3:12), परन्तु यहाँ पर पोतों को याकूब के पुत्रों के वारिस के रूप में वैध गोद लिया जाना था।

यूसुफ़ का अपने दो पुत्रों को याकूब के घुटनों पर से हटाने के विषय कथन को अगले पुष्टिकरण की ज़रूरत है जैसे मनश्शे और एप्रैम की आयु है। बाइबल अंश बताता है कि अपनी मृत्यु से पहले याकूब मिस्र में 17 वर्ष जीवित रहा (47:28), और जब यह घटना घटित हुई प्रत्यक्ष रूप से उसकी मृत्यु होने ही वाली थी। भरपूरी के सात वर्ष आरम्भ होने से पहले यूसुफ़ को उच्च अधिकार बनाया गया और उसने असनत को अपनी पत्नी के रूप में लिया; इस तरह से याकूब और उसके परिवार के अकाल के तीसरे वर्ष में मिस्र देश में आने से लगभग दस वर्ष पहले यूसुफ़ का विवाह हुआ था (45:6)। इस समय यूसुफ़ के दोनों पुत्र बीस वर्ष आयु के आसपास होंगे। इसलिए तो यह तो असम्भव है कि वे दोनों 147 वर्षीय दुर्बल दादा के घुटने पर बैठे थे (47:28)।[7] इस अभिव्यक्ति का अर्थ यह है कि यह दो युवा बच्चे याकूब के बिस्तर के पास उसके घुटनों के पास खड़े होंगे या उन पर झुके हुए होंगे।

आगे यूसुफ़ ने अपने **मुँह के बल भूमि पर गिरकर दंडवत किया**। जैसा कि पहले देखा गया, यह किसी को आदर दर्शाने और अभिवादन करने का एक तरीका था जिसकी दया प्राप्त करनी होती थी (24:52; 33:3; 42:6; 43:26)। भले ही याकूब ने पहले ही अपने पोतों को आशीषित करने के इरादे को प्रकट कर दिया था, यूसुफ़ अब, इस सम्मानित कार्य के द्वारा उसे ऐसा करने के लिए कह रहा था।

आयत 13. प्रारम्भिक तैयारियों के निष्कर्ष के साथ **यूसुफ़** ने अपने दोनों पुत्रों को अपने पिता के सामने खड़ा कर दिया। क्योंकि एप्रैम छोटा पुत्र था, उसके पिता ने **अपना दायाँ हाथ उसके सिर पर इस्राएल ने बायीं ओर रखा**। यूसुफ़ ने तब अपने बड़े पुत्र मनश्शे, जिसे महान आशीष पाने का अधिकार था, अपने बाएँ हाथ इस्राएल की ओर और उसे **उसके करीब लाया**। इस क्रिया में याकूब ने अपने दाएँ हाथ को आशीष देने के लिए मनश्शे की ओर बढ़ाया,[8] जबकि उसका बायाँ हाथ स्वाभाविक रूप से एप्रैम की ओर बढ़ाया।

आयत 14. यूसुफ़ और उसके के लिए यह हैरानी की बात थी, **इस्राएल ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर एप्रैम के सिर पर जो छोटा था, और अपना बायां हाथ बढ़ाकर मनश्शे के सिर पर रख दिया**। ऐसा उसने अपने हाथों को आड़ा करते हुए किया, इस अवस्था के परिणामस्वरूप जिसमें एप्रैम को बड़ा सम्मान दिया जाना था। यह मध्य पूर्व प्रथा के विरुद्ध था, क्योंकि मनश्शे पहलौठा था और उसे मृत्यु शय्या आशीष मिलने का अधिकार होना चाहिए था।[9]

इस विवरण में कुलपति की इस क्रिया के कारण को यहाँ प्रकट नहीं किया गया है, इसलिए उससे कुछ प्रश्न उठते हैं। (1) क्या याकूब ने एप्रैम और मनश्शे की बीच पक्षपात किया क्योंकि उसने स्वयं एसाव का स्थान लिया था और अपने पिता की आशीष को प्राप्त कर लिया था? (2) क्या याकूब के पास भविष्य को लेकर कोई ईश्वरीय अन्तर्दृष्टि थीजिसके मार्गदर्शन में उसने ऐसा निर्णय लिया, (3) क्या याकूब का न्याय कारक चरित्र यूसुफ़ से बढ़कर न्यायकर्ता था, जिसको परमेश्वर ने सपनों का अर्थ बताने के लिए और भविष्य के आयोजनों को तैयार करने की बुद्धि की आशीष दी थी? भले ही याकूब की आँखें धुँधला गई थीं, यूसुफ़ के पुत्रों को लेकर उसकी बुद्धि बिलकुल स्पष्ट थी। इसलिए, अपने दादा के इस कार्य के द्वारा मनश्शे उत्पत्ति के पहलौठों की उस सूची में शामिल हो गया जिन्होंने पहिलौठे होकर भी प्रथा के अनुसार आशीष नहीं पाई थी: जैसे इशमाएल, एसाव और रूबेन। उपयुक्त समय पर, यह की गई नबूवत पूरी हुई; यूसुफ़ के पुत्र इस्राएलियों के दो गोत्रों के प्रधान बने, और एप्रैम का गोत्र इस्राएल के उत्तरी राज्य में प्रमुख शक्ति बन गया था।

आयत 15. यूसुफ़ अपने दो पुत्रों को अपने पिता से उनको आशीष देने के लिए लाने के बाद, बाइबल अंश बताता है कि याकूब ने **यूसुफ़ को आशीर्वाद** दिया। जबकि यह प्रथम दृष्टि से ऐसा दिखाई देता है कि याकूब ने उसके विपरीत किया जो उसने करना चाहा था पद 16 और 20 दर्शाते हैं कि वे आशीषें जो यूसुफ़ के साथ आरम्भ हुई थीं वह मुख्य रूप से उसके पुत्रों के लिए निर्धारित की गई थीं। कोई भी आशीष याकूब एप्रैम और मनश्शे पर घोषित करता उसे परमेश्वर की बुलाहट के साथ जुड़ना था जो अब्राहम और इसहाक को दी गई थीं, जो परमेश्वर के सामने विश्वासयोग्यता से चले थे (देखें 17:1)। अन्य शब्दों में इन युवा पुरुषों को आशीष प्राप्त करनी थी जिसने उन्हें अपने बापदादों के पद चिन्हों पर चलने और अपने उत्तराधिकार में देने के लिए बाध्य किया। उन्हें अपने आने वाली पीढ़ियों को विश्वास में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को बताना था। इस तरह से, वे छुटकारे के इतिहास की श्रृंखला में कड़ियाँ बनेंगे।

याकूब ने प्रमाणित किया कि परमेश्वर उसके जन्म से लेकर आज के दिन तक उसका चरवाहा बना है (देखें 49:24; भजन 23:1)। निस्संदेह, याकूब उस तरह के समर्पण को जानता था जो झुण्ड की रक्षा करने के लिए और उसे जंगली जानवरों या चोर जिनसे उनको खतरा होता था चरवाहे को ऐसे समर्पण की ज़रूरत थी।

आयत 16. यह सच्च है कि याकूब कभी-कभी परमेश्वर की उपस्थिति और उसके मार्गदर्शन के प्रति जागरूक नहीं था; परन्तु जैसे उसने अतीत की ओर दृष्टि की, उसने प्रमाणित किया कि यह परमेश्वर का दूत[10] था जिसने उसे बुराई से छुड़ाया (देखें 28:15, 20; 31:3, 11, 42; 35:3; 48:21)। तब उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उन बच्चों (एप्रैम और मनश्शे) को आशीष दे, और उसने कहा कि उसका नाम उन पर रहे जैसे वह नाम उनके **बापदादे** अब्राहम और इसहाक पर था। अन्त में, उसकी प्रार्थना यह थी कि **उसके पुत्र पृथ्वी पर बहुतायत से बढ़ें**

(48:20 की टिप्पणी देखें)।

आयत 17. जब यूसुफ़ ने अपने पिता के विपरीत हाथों को देखा, दादा ने बाएँ को उसके बड़े के सिर पर और उसका दायाँ हाथ उसके छोटे पुत्र पर आशीष के लिए था, यह बात उसे बुरी लगी। इब्रानी बाइबल अंश स्पष्ट रूप से कहता है कि यह बात उसको बुरी [רַע, *राअ]* लगी। एनजेपीएसवी के अनुसार, "उसने सोचा कि ऐसा गलती से हो गया है।" यूसुफ़ इस बात को लेकर याकूब से परेशान हो गया था, यह सोचते हुए कि वह गलती कर रहा है। अन्य सम्भावना यह कि यूसुफ़ ने सोचा कि उसकी पिता की आँखें धुँधला गई हैं इसलिए वह एप्रैम और मनश्शे को पहचान न सका। स्थिति को सम्भालने के लिए, **उस ने अपने पिता का हाथ इस मनसा से पकड़ लिया, कि एप्रैम के सिर पर से उठाकर मनश्शे के सिर पर रख दे**। वह अपने पिता की आशीष को उल्टा करने की प्रयास कर रहा था, जैसे एसाव ने उन आशीषों को वापिस पाने की कामना की जो इसहाक याकूब का दे चुका था (27:34-36)।

आयत 18. जैसे ही उसने प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली गलती को सुधारने के लिए "अपने पिता के हाथ को पकड़ा," यूसुफ़ ने याकूब को स्पष्ट किया, **हे पिता, ऐसा नहीं: क्योंकि जेठा यही है; अपना दाहिना हाथ इसके सिर पर रख**। यूसुफ़ के जीवन के इस समय में जब वह समझने में गलती पर था कि प्रथा को माना जाना चाहिए था। यूसुफ़ शारीरिक दृष्टि के भाव से "देख" सका, परन्तु याकूब, जो वास्तव में दृष्टिहीन था, वह अपनी आत्मिक आँखों से देख सकता कि परमेश्वर का एप्रैम के लिए मनश्शे की बजाए परमेश्वर की बड़ी योजना है। याकूब का परमेश्वर के द्वारा मार्गदर्शन हुआ था; एप्रैम को बड़ी आशीष देना यह "बुरा" या "गलत" *(राअ)* नहीं था जैसे कि यूसुफ़ ने समझ लिया था।

आयत 19. याकूब ने यूसुफ़ के द्वारा लगाई गई रोक को नहीं माना। वह जानता था कि यह निर्णय परमेश्वर का है, उसका अपना नहीं है। जैसा कि इसी तरह से पहले हुआ था जब उसकी माँ ने बहुत वर्ष पहले परमेश्वर से पूछा था (25:22, 23; देखें गिनती 23:19, 20, 26)। इस कारण से, वह पूरी तरह से दृढ़ था जब उसने यूसुफ़ की आपत्ति का इस तरह से प्रत्युत्तर दिया, उसे आश्वासन दिया कि जो कर रहा है उसे जानता है। अपनी बात को दोहराते हुए उसने कहा, **नहीं, सुन, हे; मेरे पुत्र, मैं इस बात को भली भांति जानता हूँ**। तब याकूब ने यूसुफ़ को प्रतिज्ञा दी कि **मनश्शे** से एक **जाति** उत्पन्न होगी ... और **यह भी महान हो जाएगा**। परन्तु एप्रैम, उसका छोटा भाई इस से भी अधिक महान हो जाएगा और वंश से बहुत सी जातियाँ निकलेंगी (देखें व्यव. 33:17)।

आयत 20. अपने इस कार्य का व्याख्यान करने के बाद, याकूब ने अपने पोतों पर आशीर्वाद देना पुनः आरम्भ किया। पद 48:16 में, उसने उन पर अन्य पुरुष के रूप में आशीर्वाद दिए "फिर यह कहकर उनको आशीर्वाद दिया, लोग तेरा नाम लेकर ऐसा आशीर्वाद दिया करेंगे।" अब उसे उन्हें नाम लेकर सीधा सम्बोधित किया, मध्यम पुरुष का प्रयोग करते हुए **तेरा नाम लेकर इस्राएली लोग यह कह कर आशीर्वाद दिया करेंगे, परमेश्वर तुझे एप्रैम और मनश्शे के**

समान बना दे। वही आशीष राहेल और लिआ और पेरेस के घराने के फलवन्त होने के आशीर्वाद रूत 4:11, 12 में दिखाई देते हैं।

बड़ी संख्या में वे संतान उत्पन्न करेंगे, याकूब ने **मनश्शे से पहले एप्रैम पर हाथ रखे**। उसके आशीर्वाद निश्चय ही सफल होंगे। मिस्र देश में इस्राएल के अन्तिम समय में, यूसुफ़ के वंशज में पुरुषों की संख्या 72,700 थी। मनश्शे की 32,200 जबकि एप्रैम की संख्या 40,500 थी (गिनती 2:18-21)।

आयत 21. याकूब के इस संसार का समय लगभग समाप्त हो चुका था; एक बार उसने यूसुफ़ पर घोषित किया, **देख, मैं तो मरने पर हूँ।** क्योंकि मृत्यु नज़दीक थी, कुलपति अपने उत्तराधिकारी के रूप में यूसुफ़ को तैयार करना चाहता था, अपने परिवार और उनकी देखभाल का प्रधान होने के लिए। सबसे पहले उसने आत्मिक आशीर्वाद को वसीयत में रखा: **परमेश्वर तुम लोगों के संग रहेगा, और तुम को तुम्हारे पितरों के देश में फिर पहुंचा देगा।** आशीर्वाद में, दोनों ही बातों में सर्वनाम "तुम" है। पहला सर्वनाम प्रयोग करने के द्वारा, याकूब कर रहा था कि परमेश्वर उसके सारे घराने के साथ होगा जैसे यूसुफ़ उनका मार्गदर्शन करेगा और उनके जीवनों में निर्देश देगा। भले ही सभी भाई बिन्यामीन को छोड़ सभी यूसुफ़ से बड़े थे, यूसुफ़ ही था जिसे सब पर प्रधानता करनी थी, उनके कुलपति के रूप में और मिस्र में उदार शासक के रूप में (37:5-8; 45:26)।

आयत 22. परिवार पर यूसुफ़ का वर्तमानकालिक अधिकार पर ज़ोर देने के लिए, याकूब ने उसे यूसुफ़ के दो पुत्रों के द्वारा उसे विरासत का **दोगुना** भाग देने की प्रतिज्ञा दी। एप्रैम और मनश्शे दोनों ही को प्रतिज्ञा के देश में हिस्सा मिलेगा। भविष्य में, जब वे देश पर अपना अधिकार करेंगे, यूसुफ़ के वंशज "अपने पुरखाओं के देश में वापिस आएंगे" (48:21)। याकूब ने इसे बनाए रखा कि यह परमेश्वर की उपस्थिति अब और भविष्य में होगी से मात्र नहीं होगा परन्तु उसने बीते समय में परमेश्वर के अनुग्रह के कार्यों को देखने के कारण भी। वह परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास को प्रकट कर रहा था। बहुत समय पहले, परमेश्वर ने प्रत्यक्ष रूप से याकूब को देश का एक भाग **अमोरियों के हाथ** [अपनी] **तलवार और** [अपने] **धनुष के बल के द्वारा लेने दिया था।**

आयत 48:22 के सम्बन्ध में दो समस्याएँ खड़ी होती हैं। पहल तो "भाग" के अनुवाद को लेकर। इब्रानियों का शब्द שְׁכֶם *(शेकेम)* है, जिसका अर्थ है "कान्धे" या "पीठ" (9:23; 21:14); परन्तु यह एक नगर का नाम भी है जो कनान देश का केन्द्रीय भाग है, जहाँ याकूब और अब्राहम दोनों ही गए थे (12:6; 33:18)।[11] जब इस उद्धरण नगर के रूप में दिया जाता, तो इब्रानी भाषा के शब्द "शकेम" के उन्हीं अंग्रेजी के अक्षरों को प्रयोग किया जाता है "शकेम।" इस नगर का यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि यह पहाड़ गरीज्जीम और पहाड़ एबाल की ढलान के बीच बनाया गया था।[12] शकेम को गोत्र में स्थित था जिसे बाद में मनश्शे को दे दिया गया (यहोशू 17:7-9) और इसका सिवाना एप्रैमियों के पास था।

दूसरी समस्या और भी जटिल है, और याकूब के कथन के साथ सम्बन्धित होती है कि उसने इस "भाग" को एमोरियों[13] से अपनी तलवार और धनुष के साथ कब्ज़ा किया था। याकूब का किसी भी नगर के विरुद्ध हथियार उठाने का बाइबल विवरण कोई नहीं है। कहानीकार 33:18, 19 में, बताता है कि याकूब ने कुछ भूमि हमोर से खरीदी थी, जो शकेम नगर का प्रधान था, परन्तु इसके लिए कोई युद्ध नहीं हुआ था। कहा गया कि मात्र शिमोन और लेवी ने शकेम के पुरुषों को दीना के साथ उसके पुत्र ने कुकर्म किया था इसके कारण से उनको घात किया था (34:25)। इस तरह के संघर्ष के संक्षिप्त विवरण का कारण इन दो भाइयों का कई हत्याओं का अभियोग था, जो याकूब ने खूनी खेल के बाद में किया (34:30) और अपने मृत्यु शय्या की आशीष में किया (49:5-7)। परन्तु शकेम के विरुद्ध याकूब का तलवार और धनुष उठाना कहीं भी नहीं वर्णन किया गया है।

लम्बे समय से, यहूदी और मसीही विद्वान एक ही पहेली में उलझे हुए हैं कि याकूब के इस कथन को कैसे समझें। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ यहाँ दी गई हैं:

1. यह तो बड़ा असम्भव से दिखाई देता है कि यह दो भाई अपने आपमें बिना किसी चिल्लाहट और स्त्रियों के रोने के बिना और वहाँ अन्य निवासियों की चेतावनी के बिना शकेम के पुरुषों को घात किया होगा, परन्तु याकूब की परिवार और दासों ने साथ दिया होगा। यही लड़ाई के व्यापक होने का कारण होगा, याकूब के सारे पुरुषों ने हमोर के पुत्र के विरुद्ध सख्त लड़ाई की। यदि वह इस तरह से हुई तो निश्चय ही याकूब ने अपने पुत्रों को डांटा होगा और उसने उनके अन्दर से कुलपति के वंशजों की अगुआई के भरोसे को खो दिया (49:5-7)।[14] यह विचार में मुख्य कमज़ोरी यह है कि शकेम के इस तरह के किसी भी बड़ी लड़ाई का बाइबल में कोई विवरण नहीं दिया गया है। इस तरह की लड़ाई की कल्पना करना और भी कठिन है कि शकेम में इस तरह के सभी पीड़ित लोगों के साथ इस तरह की लड़ाई हुई होगी जबकि इस्राएली सकुशल थे।

2. भले ही याकूब व्यक्तिगत रूप से शकेम के लोगों का घात करने में और शिमोन और लेवी के साथ नगर को लूटने में सहभागी नहीं था, उसने कई वर्षों के बाद इसे लड़ाई का नाम दिया क्योंकि जो उसके पुत्रों ने किया था वह उसी का कार्य गिना गया।

3. अमोरियों पर तलवार और धनुष से शकेम पर याकूब की विजय जिसका विवरण उत्पत्ति की पुस्तक में वर्णन नहीं किया गया है। परन्तु, इस तरह की घटना को 34 अध्याय से पहले या बाद में ऐतिहासिक वर्णन के रूप में रखना कठिन होगा, जब याकूब और उसका दल शकेम के क्षेत्र से लगभग पचास मील दूर दक्षिण हेब्रोन चले गए थे।

4. अपनी 147 वर्ष की आयु में, याकूब को इस घटना की स्पष्ट स्मृति नहीं थी; इसलिए उसने अमोरियों पर विजय को व्यक्तिगत बना दिया। यह व्याख्यान संदेहजनक है; अध्याय 48 इस बात को प्रकट करता है कि भले ही याकूब की देह

निर्बल हो गई थी, उसकी बुद्धि अभी भी तीक्ष्ण थी।

इन में से कोई भी सम्भावित समाधान निश्चित नहीं है। याकूब का कथन एक पहेली ही बना हुआ है जो ऐसा दिखाई देता है कि यह कभी भी सुलझ नहीं पाएगा, क्योंकि कुलपति की तलवार और धनुष से शत्रुओं पर विजय सम्बन्धी हमारे पास कोई भी ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।

अनुप्रयोग

एक परिपक्व विश्वास (47:28-48:22)

उत्पत्ति के समापन अध्यायों में याकूब को एक वृद्ध कुलपति के रूप में चित्रित किया गया है जिसका विश्वास समय बीतने के साथ-साथ परिपक्व हो गया था। वह अपनी गलतियों में से उभरा था और जीवन के तूफ़ानों में स्वयं को बदलता रहा। अपने सांसारिक जीवन के अन्तिम दिनों में, वह चाहता था कि उसके वंश भी उसके प्रकार के विश्वास को ग्रहण करें। उसका उदाहरण परमेश्वर पर भरोसा रखने के लिए हमारे लिए भी प्रेरणादायक होना चाहिए।

परिपक्व विश्वास आशा को बनाए रखता है कि परमेश्वर की परम प्रतिज्ञाएँ पूरी हों। पराए देश में याकूब अपनी मृत्यु के नज़दीक था; और भले ही उसके परिवार का मिस्र देश में फिर से यूसुफ़ के साथ मेल-मिलाप हो गया था, और फ़िरौन के द्वारा दिए गए प्रावधान से वे संतुष्ट थे, वृद्ध कुलपति को याद था कि मिस्र देश उसका स्थायी घर नहीं है। वह इस बात को सहन नहीं कर सका कि उसे अपने दादा अब्राहम और उसके पिता इसहाक और उसकी प्रिय पत्नी राहेल से कहीं दूर मिट्टी दी जाए। इसलिए, याकूब ने यूसुफ़ के साथ एक वाचा बान्धी कि वह उसकी मृतक देह हो मिस्र में मिट्टी नहीं देगा, परन्तु इसको ले जाकर कनान देश में पारिवारिक कब्रिस्तान में अर्थात मकपेला की गुफ़ा में दफ़नाए (47:29-31; 50:13)।

याकूब परमेश्वर की प्रतिज्ञा को जानता था चार सौ वर्ष के बाद, उसका वंश मिस्र देश से कनान देश, प्रतिज्ञा के देश में वापिस चला जाएगा (15:13-16)। यदि उसको अपने पुरखाओं के संग दफ़नाया जाए तो वह उस भावना में रहेगा, कि वह उनके साथ महिमामय भविष्य में सहभागी होगा। यूसुफ़ के शपथ खाने के बाद कि वह वही करेगा जो उसका पिता करने के लिए कह रहा था, "इस्राएल ने खाट के सिरहाने की ओर सिर झुकाया" (47:31)। इब्रानियों की पत्री का लेखक याकूब के जीवन के इस अन्तिम कार्य का व्याख्यान करता है - विश्वास ही से याकूब ने मरते समय ... दंडवत किया (इब्रा. 11:22)।

कुलपति के समय में, परमेश्वर के लोगों के पास मृत्यु के बाद जीवन की स्पष्ट प्रतिज्ञा नहीं थी, जैसे कि यीशु ने अपने अनुयायियों को लाज़र की कब्र पर दी थी (यूहन्ना 11:21-27); फिर भी विश्वास से उन्होंने समझ लिया था कि मृत्यु अन्त नहीं होगा। इब्रानियों की पत्री का लेखक इस बात की पुष्टि करता है कि विश्वासयोग्य पुरखा "ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की

हुई वस्तुएं नहीं पाई; पर उन्हें दूर से देखकर आनंदित हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं" (इब्रा. 11:13)। दरअसल, वे अपने अधिकांश जीवन में, पुराना नियम के यह माननीय व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे, "एक नगर" और "उत्तम देश" के अभिलाषी रहे (इब्रा. 11:16) मूर्तिपूजा, पाप, हिंसा और भ्रष्टाचार पर बिना विचार किए जो उनके संसार को त्रस्त करते थे। एक भाव में - और सम्भवतः इसको पूरी तरह से जाने बिना - उनकी अभिलाषा थी "स्वर्गीय देश" क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि इस संसार में कहीं भी पूर्ण शान्ति और सुरक्षा नहीं है (इब्रा. 11:16)।

इसी तरह की आशा और सुरक्षा का संदेश उचित यहूदी मसीहियों के भविष्य के लिए था, जिन्होंने पहली शताब्दी में यरूशलेम के पतन से पहले (70 ई.) जीवन व्यतीत किया था। प्रत्यक्ष रूप से, राष्ट्रवादी यहूदियों के दबाव के कारण, उन में से कुछ प्रभु यीशु मसीह में इस विश्वास को त्यागने के खतरे में थे कि वह उनका व्यक्तिगत उद्धारकर्ता है (इब्रानियों 3:12-14)। बहुत से लोगों को यहूदी प्रथाओं और मन्दिर में पूजा करने के प्रति समर्पित करने के लिए वापिस लाया गया। उनको पाप बलि के रूप में पशु बलि पर भरोसा करना पड़ा (इब्रा. 10:1-4)। इसके अतिरिक्त, बलियों को इस दृष्टि से देखा गया कि यह यरूशलेम को आने वाले रोमी विनाश से बचा लेंगी (इब्रानियों 10:25-29), जिसके विषय यीशु ने उनके जीवन काल में होना बताया था (लूका 21:20-24)। मसीही व्यवस्था में परमेश्वर के यह लोग, किसी स्तर पर, पुराने नियम के विश्वास के वीरों के साथ समरूप स्थिति में हैं। उन्होंने "एक उत्तम देश [नगर] अर्थात स्वर्गीय देश" की अभिलाषा की और परमेश्वर ने उनके लिए "एक नगर तैयार किया है" (इब्रा. 11:16)।

मसीह की ओर से हमारे लिए संदेश यह है कि हमें अपने वास्तविक घर के रूप में यरूशलेम या किसी अन्य सांसारिक नगर की ओर नहीं देखना चाहिए। "क्योंकि यहां हमारा कोई स्थिर रहनेवाला नगर नहीं, वरन हम एक आने वाले नगर की खोज में हैं।" (इब्रा. 13:14)। इब्रानियों की पत्री का लेखक यह कह सकता था, यीशु में "विश्वास के पूर्ण आश्वासन" और "आशा" में (इब्रा. 6:11; 10:22), "तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, के पास आओ और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, ... के पास, आए हो" (इब्रा. 12:22, 23)।

परिपक्व विश्वास भविष्य में आत्मविश्वास को विकसित करता है ज्यों-ज्यों हम परमेश्वर की बीते समय की आशीषों को याद करते हैं। जैसे ही याकूब अपनी मृत्यु के नज़दीक पहुँचा, यूसुफ़ अपने दो पुत्रों मनश्शे और एप्रैम के साथ उसके पास आया। कुलपति ने सबसे पहले जो किया वह था परमेश्वर की महान प्रतिज्ञाओं पर समीक्षा करना:

> सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कनान देश के लूज़ नगर के पास मुझे दर्शन देकर आशीष

दी, और कहा, सुन, मैं तुझे फुला-फलाकर बढ़ाऊंगा, और तुझे राज्य-राज्य की मंडली का मूल बनाऊंगा, और तेरे पश्चात तेरे वंश को यह देश दूंगा, जिस से कि वह सदा तक उनकी निज भूमि बनी रहे (48:3, 4)।

परमेश्वर ने पहल कदमी की और उससे इन प्रतिज्ञाओं को किया जब वह और उसका परिवार उसके पुत्रों के धोखा देने और नगर को लोगों को घात करने और उनका धन लूटने, पशुओं, स्त्रियों और बच्चों को लेने के बाद शकेम से भाग रहे थे (34:25-29)। निस्संदेह, वे कनानियों के नगरों और गाँवों से लोगों के प्रतिशोध से डरते थे; परन्तु परमेश्वर ने "आस-पास के नगरों पर" उनका भय बनाए रखा, इसलिए "उन्होंने याकूब के पुत्रों का पीछा नहीं किया" (35:5)। परमेश्वर ने याकूब से बातचीत की और उसे बेतेल (लूज़) में जाने के लिए कहा और वहाँ उसके लिए एक वेदी बनाई। याकूब को अपने दल से मूर्तियों को निकालना था। उनको अपने वस्त्र बदलने थे और स्वयं को शुद्ध करना था; तब ही याकूब परमेश्वर की आराधना की तैयारी में वेदी बना सका। उसके लोगों को यह समझना था कि सच्चा परमेश्वर धोखे, हत्या, चोरी और मूर्तिपूजा को सहन नहीं करता जो वह शकेम में करते थे (35:1-3)।[15] याकूब के परिवार के लिए और जो उसके साथ लोग थे उनके लिए आराधना का आधार उनका उन बातों के प्रति धन्यवाद करते हुए याद करना था परमेश्वर ने जो उनके साथ किए थे और उनको शत्रुओं से शारीरिक रूप से बचाने के लिए और उनको पापों से आत्मिक रूप से बचाने के लिए उसने क्या किया था।

याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ़ और अपने दोनों पोतों मनश्शे और एप्रैम के सामने याद किया तो उसने याद किया कि बेतेल में दूसरी बार आने पर परमेश्वर ने जो आशीषों की प्रतिज्ञा उससे की, सारांश में, वे वही थीं जो उसी स्थान पर बीस वर्ष पहले जिनका वचन दिया था (28:12-15; 35:11, 12)। आगे चलकर, उनमें से कुछ प्रतिज्ञाएँ वही थी जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ की थीं (12:1-3; 17:1-8)। परमेश्वर ने अपने नाम को "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" के रूप में प्रकट किया (17:1) इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि कोई ताकत या बल उसकी आशीष को "विश्वास के पिता" और उसके वंश से रोक नहीं सकते (देखें रोमियों 4:16)। इसके विपरीत, वह उन्हें जातियों में बढ़ाएगा। यहाँ तक कि अब्राहम के निज वंश इसहाक और याकूब के लिए इससे भी बड़ी प्रतिज्ञाएँ आरक्षित थीं, जिनको बढ़ना था और मिस्र देश में एक बड़ी जाति बनाना था। उनके वंशज कनान, प्रतिज्ञा के देश में जाएँगे, जहाँ वे परमेश्वर की वाचा के अधीन रहेंगे और राजाओं पर शासन करेंगे (15:13-16, 18; 17:6, 7)। यह सब, निस्संदेह, भविष्य की पीढ़ियाँ थीं; परन्तु, परमेश्वर की प्रतिज्ञा की जानकारी ने कुलपति के वंशजों को एक विशेष पहचान दी। वे जानते थे कि वे क्या थे, वे कहाँ से आए थे और वे कहाँ जा रहे थे। परमेश्वर के अनुग्रह से, वे नियति की संतान थे।

अब्राहम को दी गई विशिष्ट प्रतिज्ञाएँ सुसमाचार के संदेश का आरम्भ थीं।

परमेश्वर ने अपने योजनाओं को पुरखों पर तब प्रकट किया जब उसे उसने अपना देश छोड़ने के लिए कहा और उस देश में जाने के लिए कहा जो किसी दिन उसके वंश को दिया जाएगा (गला. 3:8, 9)। जब भी कुलपतियों का विश्वास घटने लगता था, परमेश्वर उन्हें अपनी प्रतिज्ञाओं को याद करवाता था। हमें इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम कौन हैं, हम यहाँ पर क्यों हैं, या परमेश्वर के लोगों के रूप में हम किस ओर जा रहे हैं। जब पौलुस ने गलातिया के मसीहियों को सम्बोधित किया, उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि वे सभी परमेश्वर की संतान हैं। उसने लिखा,

> क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो (गला. 3:26-28)।

प्रेरित ने अपने विचार को अब्राहम को दिए गए समाचार को मसीह के सुसमाचार के द्वारा पूर्ण करने का प्रयास कियाः "और यदि तुम मसीह के हो, तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो" (गला. 3:29)।

निस्संदेह, याकूब सारी आशीषों को नहीं समझा था जो दूर भविष्य में थीं, परन्तु वह यह जानता था कि वह और उसका परिवार के पास एक अनोखी मंजिल थी। कई वर्षों से, परमेश्वर उसके जीवन में कार्य करता आ रहा था, जैसा उसने उसके पिता और दादा के जीवनों में उससे पहले किया था। वह सारे संसार को आशीष देने के लिए एक विशेष जाति को उठा रहा था। मिस्र देश में, याकूब ने व्यक्तिगत रूप से "सर्वशक्तिमान परमेश्वर के कार्यों" की साक्षी दी थी (35:11; 43:14; 48:3): परमेश्वर ने याकूब के अपने पुत्र को उस बड़े देश में उसके परिवार को विनाश से बचाने के लिए उच्च अधिकारी ठहरा दिया। मिस्र देश के लोगों को, अन्य लोग जो संसार के कई भागों से अकाल के कारण से वहाँ आए थे उनको भुखमरी से बचाने के लिए यूसुफ़ को परमेश्वर के एक प्रतिनिधि के रूप में प्रयोग किया। अब्राहम के वंश पर परमेश्वर की आशीषें अपने आप ही अन्य जातियों पर पहुँच गई, अब्राहम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा करने में।

परिपक्व विश्वास हमें विनम्र बनाए रखेगा और हमें इस बात को ग्रहण करने के लिए सहायता करेगा कि यह ज़रूरी नहीं कि मनुष्य के विचार परमेश्वर के विचार ही हों। यूसुफ़ को एक बार फिर इस सच्चाई से अवगत करवाया गया जब वह अपने दोनों पुत्रों को अपने वृद्ध पिता के पास लाया ताकि वह मरने से पहले उन्हें आशीर्वाद दे। याकूब के लिए मृत्यु शय्या की आशीष इतनी महत्वपूर्ण स्थान रखती थी कि उसने इसे प्राप्त करने के लिए धोखा दिया और अपने पिता इसहाक के हृदय को दुःख दिया था। यूसुफ़, निस्संदेह, जानता था कि वह हर बात के लिए परमेश्वर का ऋणी है, जिसने उसे भरपूरी से आशीषित किया और उसे एक दास की स्थिति से धनी और मिस्र देश का उच्च अधिकारी और अपने लोगों का रक्षक

बना दिया। बड़े दुःख की बात है, वे जो बुद्धि, धन और पदवी से भरपूरी से आशीषित किए गए हैं वह इस प्रलोभन में पड़ गए हैं कि वे गलती कर ही नहीं सकते; वे अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के साथ भ्रमित कर देते हैं।

बिलकुल ऐसा ही हुआ जब यूसुफ़ ने अपने पुत्रों को उनके दादा के सामने खड़ा किया, जिसको उस समय ठीक से दिखाई नहीं देता था, इसलिए याकूब का दाहिना हाथ स्वाभाविक रूप से मनश्शे के सिर पर होना था और बायां हाथ आराम से एप्रैम के सिर पर होना था (48:13)। याकूब ने जानबूझकर अपने हाथों को विपरीत किया ताकि उसका दाहिना हाथ एप्रैम पर हो और बायां हाथ मनश्शे पर हो (48:14) तब वह आशीर्वाद उच्चारित करने लगा (48:15, 16)। जब यूसुफ़ ने देखा कि उसका पिता क्या रहा है, उसने अपने पिता को अपनी गलती सुधारने का प्रयास किया (48:17, 18)। इस अवसर पर, याकूब, जो वास्तव में देख नहीं सकता था, परमेश्वर की इच्छा के प्रति उसका आत्मिक दृष्टिकोण यूसुफ़ से बेहतर था। सामान्य रूप से, यह यूसुफ़ ही था जिसकी आत्मिक दृष्टि तेज़ थी, परन्तु वह परमेश्वर की इच्छा सम्बन्धी इस आशीष के प्रति अनजान था। इसलिए, याकूब ने यूसुफ़ की विनती को अनदेखा किया और अपना हाथ वहीं वापिस रखा और मनश्शे को प्राथमिकता दी। याकूब का मात्र यही उत्तर था, "मैं जानता हूँ मेरे पुत्र, मैं जानता हूँ।" वृद्ध व्यक्ति ने अपने दोनों ही पोतों को आशीर्वाद दिया, परन्तु उसने एप्रैम को मनश्शे से बड़ा आशीर्वाद दिया (48:19)।

अपने जीवन के आरम्भ के दिनों में, याकूब, धोखेबाज़, उसने अक्सर स्वयं को धोखा दिया और अपने कार्यों से भविष्य के परिणामों को देखने में उसे कठिनाई थी। कई तरह से, याकूब ने परमेश्वर की बुद्धि का अनुसरण नहीं किया, परन्तु उसने सांसारिक बुद्धि का अनुसरण किया (याकूब 3:13-18)। परन्तु, अपने जीवन के घटते हुए वर्षों में, और विशेषकर जब वह मृत्यु की छाया में था, वह उस प्रकार का व्यक्ति बन गया था जिस प्रकार का व्यक्ति परमेश्वर उसे बनाना चाहता था। भले ही उसने कई बार स्वयं को बिगाड़ा परन्तु सनातन कुम्हार उसे लगातार ढालता रहा और उसे फिर से आदर का पात्र बनाया (यिर्म. 18:3, 4) जो सही समय पर सही कार्य करेगा। वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कर रहा था जब उसने एप्रैम को मनश्शे से बड़ा आशीर्वाद दिया। याकूब स्वयं एक छोटा पुत्र था जिसे अपने बड़े भाई एसाव के आशीर्वाद को प्राप्त करना उसके लिए नियत था। परन्तु, उसने इसे धोखे और झूठ से प्राप्त किया था (25:21-34; 27:1-41)। अपनी वृद्धावस्था में, परमेश्वर[16] की बुद्धि के द्वारा उसे प्रत्यक्ष रूप में यह पता चला कि छोटे पुत्र यूसुफ़ के वंशज उसके बड़े पुत्रों के वंशजों से बढ़कर होंगे। इसलिए उसने यूसुफ़ की आपत्ति के बावजूद भी एप्रैम को बड़ा आशीर्वाद दिया।

हमें यह जानना है कि बाइबल के चरित्रों को कभी कभी दिव्य बुद्धि दी गई थी जिसने उनको आनेवाली घटनाओं के विषय बताने के सक्षम किया जैसे यूसुफ़ ने किया था। इस तरह के व्यक्तियों ने अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के

साथ भ्रमित किया उन्होंने गम्भीर परिणाम देखें। यूसुफ़ इसमें कोई संदेह नहीं कि वह अपने दोनों पुत्रों मनश्शे और एप्रैम की भूमिकाओं के प्रति सही था, इसलिए उसने पिता के आशीर्वादों को उल्टा करने का प्रयास किया। जितना यह कठिन दिखाई देता था, इस समय यूसुफ़ - जिसने उपयुक्तता के साथ भविष्य की बात पहले से बतलाया - अपने पुत्रों के स्थान के सम्बन्ध में वह गलत था। अपने श्रेय के लिए उसने याकूब की बात का सामना नहीं किया और अपने सम्बन्धों में कोई दरार नहीं आने दी। हो सकता है वह समझ गया था यह ज़रूरी नहीं कि मनुष्य के विचार परमेश्वर के विचार ही हों (यशा. 55:8, 9)।

इस सिद्धान्त का एक अन्य उदाहरण यूहन्ना बपतिस्मा सम्बन्धी विवरण में पाया जाता है, जिसने सही तरीके से यीशु के मसीह होने के परमेश्वर के पुत्र के रूप में साक्षी दी थी (मरकुस 1:1-11; यूहन्ना 1:19-34)। यूहन्ना कैद में डाले जाने के बाद, उसने अपने शिष्यों को यीशु से पूछने के लिए भेजा, "क्या आनेवाला तू ही हैः या हम दूसरे की बाट जोहें?" (मत्ती 11:3)। यीशु ने भविष्यवाणी की अनुरूपता में यूहन्ना के शिष्यों को अपने मसीह होने की यह बताने के द्वारा पुष्टि की कि कंगालों को सुसमाचार प्रचार किया जा रहा है और रोगी चंगे हो रहे हैं (मत्ती 11:4, 5; देखें यशा. 35:5; 61:1)। यूहन्ना के पूछने आए शिष्यों के लिए प्रभु के विदाई वचन थे जो उन्हें वापिस लेकर जाने थे "धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए" (मत्ती 11:6)। यीशु ने यूहन्ना के द्वारा पूछे गए प्रश्न के कारण उसकी नबूवतीय सेवा की वैधता का इनकार नहीं किया; इसके विपरीत, उसने कहा कि सभी नबियों में से यूहन्ना सबसे बड़ा नबी है (मत्ती 11:10, 11) क्योंकि उसने उसकी और उसके राज्य की गवाही दी थी।

परमेश्वर ने यूहन्ना पर अपने वाले राज्य की प्रकृति को प्रकट नहीं किया था; इसलिए, उसने, अपने कई संगी यहूदियों की तरह, कि मसीह यहूदी राजनैतिक/सैनिक राज्य को स्थापित करेगा और दुष्ट हेरोदेस को सिंहासन से उतार देगा और फलीस्तीन से रोमी राज्य को उखाड़ देगा। भले ही उसमें पूर्ण समझ की कमी थी, यूहन्ना की भीड़ में यीशु के विषय साक्षी सच्ची थीः वह मसीह था (परमेश्वर का पुत्र) और अपने सनातन राज्य पर राजा था (देखें 2 शमूएल 7:12-16; भजन 2:6, 7; 110:1, 2, 4)। यह बाइबल अंश मुख्य रूप से दाऊद और सुलैमान के द्वारा पूरे हुए, परन्तु उनकी परम-पूर्णता यीशु की मृत्यु, उसके गाड़े जाने और मृतकों में से जी उठने में होती है। 40 दिनों तक वह अपने शिष्यों के साथ रहा, उन्हें अटल प्रमाण दिखाता रहा कि वह मृतकों में से जी उठा है इससे पहले कि वह स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन पर उठा लिया गया। अन्त में, पिन्तेकुस्त के दिन, पवित्रात्मा प्रेरितों पर उतरा। पतरस प्रचार करने लगा कि यीशु स्वर्ग में दाऊद के सिंहासन पर उठा लिया गया है, उस नबूवत के पूरे होने में। पतरस के संदेश का परिणाम असाधारण थाः तीन हज़ार लोग अपने पापों से कायल हुए और उन्होंने सुसमाचार का पालन लिया, सनातन, स्वर्गिक राज्य के नागरिक बनने लगे (प्रेरितों 2:22-47)।

मसीह के कार्य और उसके राज्य की प्रकृति के विषय की गई नबूवतें बहुत हैं

और भिन्न हैं। किसी भी नबी को मसीह के व्यक्तित्व और उसके राज्य की प्रकृति की पूर्ण सच्चाई नहीं दी गई थी। इसके बजाए, परमेश्वर ने अपनी योजनाओं के भिन्न भिन्न भाग और रूप समय के साथ साथ कई नबियों के द्वारा और भिन्न भिन्न परिस्थितियों में प्रकट किए (1 पतरस 1:10, 11)। यही बात अब्राहम के वंशजों के विषय में थी। परमेश्वर के लोगों का विचार, याकूब के द्वारा, प्रतिज्ञा के देश में 12 गोत्रों का भिन्न भिन्न भूमिकाओं के साथ बढ़ना समय के साथ साथ भिन्न भिन्न व्यक्तियों के द्वारा धीरे धीरे प्रकट किया गया।

समाप्ति नोट्स

[1] *'ओलाम* का हमेशा अर्थ "सनातन" नहीं होता है; यहाँ इसका अर्थ "उम्र भर के लिए" या "लम्बे समय के लिए" है (13:14, 15 पर टिप्पणी देखें)। [2]याकूब ने मनश्शे से पहले एप्रैम को रखा, भले ही मनश्शे पहलौठा था। इस क्रम की महत्वता स्पष्ट सामने आती है जब यह कहानी आगे खुलती है। [3]एक अन्य घटना मध्य पूर्व में जहाँ दादा ने अपने पोतों को गोद लिया, देखें आइज़क मेंडलेसोन, "उगारिटिक पैरलल टू दि एडॉपशन ऑफ एप्रैम एण्ड मनश्शै," *इस्राएल एक्सप्लोरेशन ज़ोरनल* 9, नम्बर 3 (1959): 180-83. [4]पहलौठे के अधिकार को विरासत के दोगुने भाग से सम्मानित किया गया है जो उसे पाता है। परन्तु, इस मामले में, यूसुफ़ के पक्ष में और फिर उसके दोनों पुत्रों एप्रैम और मनश्शे को गया, जिनको याकूब ने अपने निज पुत्र करके गोद लिया था। [5]केनेथ ए. मैथ्यूस, *जेनेसिस 11:27-50:26*, दि न्यू अमेरिकन कमैंट्री, वाल. 1बी (नैशविलेः ब्रोडमैन & होलमन पबलिशर्स, 2005), 875. [6]ब्रूस के. वाल्के, *जेनेसिसः ऐ कमैंट्री* (गैंड रेपिडस, मिश.: ज़ोंडरवेन पबलिशर्स, 2001), 597. [7]इब्रानियों 11:21 कहता है विश्वास ही से याकूब ने "मरते समय" यूसुफ़ के दोनों पुत्रों में से एक एक को आशीष दी। [8]सारे पवित्रशास्त्र में, दाएँ हाथ की ओर को हमेशा ही विशेष आदर और आशीष का स्थान माना गया है (भजन 110:1; मत्ती 25:33; इब्रा. 1:3)। [9]पहलौठे को दुगना भाग देने की प्रथा बाद में मूसा की व्यवस्था का एक भाग गई थी (व्यव. 21:15-17)। [10]याकूब के विवरण में शब्द "दूत" परमेश्वर के अनुरूप है। बाइबल के कई अंश "परमेश्वर का दूत" दर्शाते हैं अर्थात, वह जो परमेश्वर के रूप में बोलता है और उसका प्रतिनिधित्व करता है (16:7-13; 18:1-20)। वह "व्यक्ति" जिसके साथ याकूब ने मल्ल-युद्ध किया था वह भी "परमेश्वर" कहलाया और प्रत्यक्ष रूप से वह परमेश्वर का दूत था (32:24-30)।

[11]विक्टर पी. हैमिल्टन, "שָׁכֶם," *TWOT* में, 2:924-25. [12]आयत 48:22 में अंग्रेजी संस्करणों ने "शकेम" कहते हैं (NAB; NJB; TEV), जबकि अन्य संस्करणों में पढ़ते हैं "माऊँटेन सलोप" (RSV; ESV) या "रिज ऑफ लैंड" (NIV)। [13]"एमोरी" एक सामान्य पद नाम है जो कनान देश में इस्राएल से पहले निवासियों का उल्लेख किया है (15:16), इसमें शकेम में हित्ती भी शामिल हैं (34:2)। [14]शिमोन का गोत्र बाद में यहूदा के गोत्र में मिल गया और लेवी के गोत्र को प्रदेशीय भूमि मिली। इसके बजाए उन्हें पूरे कनान देश में लेवी के नगर दिए गए। [15]दल ने अपनी मूर्तियों को त्यागा जिसमें राहेल के घराने की देवताओं की मूर्तियाँ भी थीं जो वह अपने पिता के घर से चुरा कर लाई थी (31:30-35), और उनको शकेम के दक्षिण में सिन्दूर के पेड़ के नीचे गाड़ दिया (35:4)। [16]याकूब अपने दोनों पोतों के वंशजों के भविष्य को सैकड़ों वर्ष पहले कैसे जान सकता था जब तक कि परमेश्वर ने उसे नहीं बताया था?